'पाती अपनों को मुहिम'
एक नवाचारी प्रयास

सूरज सिंह नेगी*
मीना सिरोला**

आज समाज विभिन्न क्षेत्रों में उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा है। लोगों के जीवन स्तर, शिक्षा, तथा स्वास्थ्य में निरंतर सुधार देखने को मिल रहा है, लेकिन इन सबके बावजूद आज संवेदनशून्यता, संवादहीनता, रिश्तों में आ रही छीजन, युवा पीढ़ी का दिग्भ्रमित होना, सोशल मीडिया की गिरफ्त में रहते अपनों के लिए समय न निकाल पाना, यह सब एक सुखी परिवार, समाज व राष्ट्र के भविष्य के लिए चिंतन का विषय हैं। अपनों को कैसे करीब लाया जाए? सामाजिक सरोकार एवं जीवन मूल्यों के प्रति कैसे रुझान पैदा किया जाए? युवा पीढ़ी को रचनात्मकता की ओर कैसे मोड़ा जाए? संवादहीनता को कैसे कम किया जाए? इन्हीं सब बातों को समाहित करते हुए वर्ष 2018 से लुप्त होती पत्र लेखन विधा को केंद्र में रखते हुए 'पाती अपनों को मुहिम' नाम से नवाचारी प्रयोग आरंभ किया गया। राजस्थान राज्य के टोंक जिले के पीपलू उपखंड में 5 सितंबर 2018 को शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक द्वारा शिष्य को पत्र लिखकर जीवन मूल्यों की सीख देने के उद्देश्य से शुरू की गई मुहिम के अंतर्गत अब तक 21 विषयों पर पत्र लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा चुका है, इन्ही लेखन प्रतियोगिता में अभी तक तीन लाख से भी अधिक पत्र लिखे जा चुके हैं। इसके आधार पर पत्र आधारित पंद्रह पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। इस लेख में उक्त नवाचार से पर पत्र लेखन विधा द्वारा बच्चों को वैयक्तिक और सामाजिक सरोकारों से जोड़ने के प्रयोग का वर्णन किया गया है।

'पाती अपनों को मुहिम' बच्चों में संवेदनशीलता पैदा करने में कारगर साबित हो रही है, अपितु युवा पीढ़ी, विशेष विद्यालयी विद्यार्थियों के सीखने की प्रवृत्ति, सृजनशीलता और लेखन कौशल को भी बढ़ाने में कारगर साबित हो रही है। इस लेख में इसी विषय पर विस्तृत चर्चा की गई है।

आधुनिक दौर में यद्यपि दुनिया ग्लोबल विलेज में सिमट गई है, संचार के साधनों का जाल फैलता जा रहा है। इन सबके बीच संवेदनहीनता और संवादशून्यता के संकेत मिलने लगे हैं। रिश्तों में आ रही दूरी का एक महत्त्वपूर्ण कारण है— रिश्तों की अपनायत में बढ़ती छीजन। मोबाइल क्रांति का एक पहलू यह भी है कि इसने आज एक ही छत के नीचे रह रहे परिवारजनों के बीच संवाद को कम कर दिया है।

**संयोजक*, पाती अपनों को, (राजस्थान प्रशासनिक सेवा अधिकारी) विशिष्ट सहायक सहकारिता एवं नागरिक उड्डयन मंत्री, राजस्थान सरकार, राजस्थान, 170/69, सेक्टर 17, हल्दीघाटी मार्ग, सांगानेर, जयपुर, राजस्थान 302033

***आचार्य*, (सह-संयोजिका, पाती अपनों को) शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, निवाई, राजस्थान 304022

साथ ही लेखकों द्वारा भी बच्चों के साथ दैनिक अंतःक्रिया के दौरान महसूस किया गया कि उनमें संवेदनहीनता, पारस्परिकता और रिश्तों की समझ कम होती जा रही है। इसे दूर करने के उद्देश्य से वर्ष 2018 में राजस्थान राज्य के टोंक जिले में 'पाती अपनों को मुहिम' आरंभ की गई। इसके केंद्र में पत्र लेखन विधा को पुनर्जीवित करना तथा खोखले होते रिश्तों में अपनेपन को तलाशने, सामाजिक सरोकारों को सहेजने में सहयोग करना था। (*बच्चों की पाती मतदाताओं के नाम*, 2024, पृ.सं. 9)

पाती मुहिम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- पारस्परिक संवाद के माध्यम से रिश्तों में आ रही दूरियों को कम करना।
- युवा पीढ़ी की रचनात्मक सोच को विकसित करना।
- सामाजिक समरसता, जीवन मूल्यों के प्रति लोगों को सजग करना।
- राष्ट्र या समाज या परिवार या परिवेश के विषय में सोचने की विचारधारा को बल प्रदान करना।
- सोशल मीडिया के बढ़ते दुष्प्रभावों को रोकना।

वर्तमान में जहाँ एक ओर हम सब सोशल मीडिया के प्रभाव में आते जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर बच्चे रिश्तों की अहमियत को भूलते जा रहे हैं, जिससे संपूर्ण विश्व में अनैतिकता बढ़ती ही जा रही है, समाज में संवदेनहीनता एवं संवादशून्यता यत्र-तत्र देखने में आ रही है; ऐसे में यह पाती अभियान बढ़ते अँधेरे में एक प्रकाश की किरण की भाँति कार्य कर रहा है।

आधुनिकता की चकाचौंध में परिवारों में निरंतर दूरियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। एक ही परिवार के सदस्य भी अलग-अलग कमरों में रहकर आपस में मोबाइल के माध्यम से संवाद कर रहे हैं, फिर कैसे परिवारों में आत्मीयता के भाव संभव हैं! इसलिए परिवार के सदस्यों के मध्य बढ़ती इस खाई को पाटने का कार्य पाती अभियान कर रहा है। यही पत्र इन तकनीकी उपकरणों को दूर कर परिवार के सदस्यों के मध्य आत्मीयता के भाव भरने का कार्य कर रहे हैं।

जब यही पातियाँ सामाजिक मुद्दों, जैसे— बाल विवाह, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण आदि को लेकर लिखी जाती हैं, तब यह संपूर्ण समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करती हैं। सबसे रोचक बात तो यह है कि पाती लिखने वाले भी उन्हीं के समाज और परिवार के लोग हैं जो इन समस्याओं से जूझ रहे हैं, ये इन समस्याओं से बाहर निकलने का रास्ता भी प्रदान करती है।

पाती लेखन नवाचार 6 वर्षों में ही एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म बन चुका है, जो आज माता-पिता, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, माँ-बेटी तथा मित्रों के बीच संबंधों को भावनाओं के साथ जोड़ने का कार्य कर रहा है। इसमें वे पहलू भी हैं जिन्हें हम बातों या भावनाओं को सामाजिक एवं पारिवारिक बाध्यताओं के चलते सीधे अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं।

अब तक आयोजित पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ— वर्ष 2018 से आरंभ होकर पाती अपनों को मुहिम के अंतर्गत अब तक 21 अखिल भारतीय स्तर की पत्र लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन हो चुका है।

तालिका 1 — अखिल भारतीय स्तर की पत्र लेखन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की संख्या

क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता आयोजन वर्ष	सम्मिलित प्रतिभागी	क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता आयोजन वर्ष	सम्मिलित प्रतिभागी
1.	गुरु की पाती शिष्य को	2018	79	12.	प्रकृति की पाती मानव के नाम	2021	195
2.	पिता की पाती संतान को	2018	90	13.	शिक्षक को पत्र	2021	97
3.	माँ की पाती बेटी को	2019	150	14.	बापू की पाती मेरे नाम	2021	148
4.	शिष्य की पाती गुरु को	2019	205	15.	माटी की पाती मेरे नाम	2022	168
5.	संतान की पाती माता-पिता को	2019	190	16.	पाती डाकिए को	2023	178
6.	बच्चों की पाती अभिभावकों को	2020	2000	17.	बिटिया की पाती बाबुल को	2023	26000
7.	कोरोना को कैसे हराएँ	2020	75	18.	पाती यादों के गलियारे से	2023	92
8.	बाल विवाह को रोकें	2020	85	19.	लिख दी चिठिया माई को	2023	1800
9.	जल संचयन कैसे करें	2020	78	20.	बच्चों की पाती मतदाताओं के नाम	2023	270620
10.	मित्र को पत्र	2019	201	21.	पाती वीर जवानों को	2024	11200
11.	एक पाती दादा-दादी, नाना-नानी की यादों के नाम	2021	175		**कुल प्रतिभागियों की संख्या**		**310498**

अपनाई गई प्रक्रिया

पाती अपनों को मुहिम विशुद्ध रूप से एक अनार्थिक संगठन है। इसमें व्हाट्सएप ग्रुप एवं सोशल मीडिया प्लेटफोर्म के माध्यम से समूह के सदस्य आपस में जुड़े हुए हैं। सबसे बड़ा माध्यम माउथ पब्लिसिटी है। 'पाती अपनों को मुहिम' समूह के संयोजक या सह-संयोजक द्वारा पाती लेखन के लिए विज्ञप्ति जारी की जाती है। विज्ञप्ति में ही पाती प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं पाती भिजवाने हेतु पंजीकृत कार्यालय के पते तथा अन्य शर्तों का उल्लेख किया जाता है। इसका निर्धारण संपूर्ण क्षेत्र के पाती लेखकों को ध्यान में रखकर किया जाता है। अंतिम तिथि तक प्राप्त सभी पातियों को मूल्यांकन प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाता है। पाती लेखन के पश्चात

पत्र लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की सहभागिता

पुस्तक प्रकाशन तक की संपूर्ण प्रक्रिया को बहुत ही गोपनीय तरीके से पूर्ण किया जाता है। प्राप्त सभी पातियों का तीन अलग-अलग मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। इन मूल्यांकनकर्ताओं का चयन एवं इन्हें भेजी जाने वाली पातियों की कोडिंग एवं डिकोडिंग का कार्य भी एक समिति के माध्यम से किया जाता है।

पाती लेखन चाहे किसी भी विषय पर हो, सभी में एक निर्धारित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है, इसके चरण अग्रलिखित हैं—

1. **विज्ञप्ति जारी करना**— सर्वप्रथम पाती लेखन की विस्तृत विज्ञप्ति जारी की जाती है, जिसमें पाती लेखन से संबंधित समस्त नियमों एवं शर्तों तथा पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि का भी उल्लेख होता है।
2. **पाती प्राप्ति**— देश-विदेश से लिखी गयी समस्त पातियाँ (पत्र) निर्धारित तिथि तक बंद लिफाफों में डाकघर के माध्यम से आयोजकों को प्राप्त होती हैं।
3. **पातियों का सूचीकरण**— इन समस्त लिफाफों से प्राप्त पातियों को सूचीबद्ध किया जाता है।

4. **पातियों की कोडिंग एवं प्रेषण**— सूचीबद्ध की गईं पातियों के निर्धारित संख्या में बंडल बनाकर उनकी कोडिंग कर गोपनीय रूप से पूर्व में निर्धारित परीक्षकों को भेजे जाते हैं, जिन्हें परीक्षकों द्वारा जाँचकर एक निश्चित समयावधि में पुनः भेज दिया जाता है।
5. **पातियों की डिकोडिंग एवं पुनः प्रेषण**— परीक्षकों से प्राप्त पातियों की डिकोडिंग कर उनके प्राप्तांक गोपनीय रूप से सुरक्षित रख लिए जाते हैं तथा इन पातियों को फिर द्वितीय एवं तृतीय परीक्षकों को भेजा जाता है, जिन्हें इन परीक्षकों द्वारा जाँचकर एक निश्चित समयावधि में पुनः भेज दिया जाता है।
6. **वास्तविक अंकों की गणना**— उपरोक्त प्रक्रियानुसार तीनों परीक्षकों से प्राप्त पातियों की डिकोडिंग कर उनके प्राप्तांकों का औसत निकाला जाता है, जो उस पाती लेखक के वास्तविक अंक माने जाते हैं। इस प्रकार पाती की जाँच एवं अंकन का कार्य कोडिंग-डिकोडिंग के माध्यम से पूर्ण होता है।
7. **चयनित पत्रों का संकलन प्रकाशित करवाना**— सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले लेखकों के चयनित पत्रों को पुस्तक में सम्मिलित किया जाता है।

पत्र आधारित प्रकाशित पुस्तकें

अब तक विभिन्न विषयों को केंद्र में रखकर आयोजित पाती लेखन प्रतियोगिता में प्राप्त पत्रों में से अंतिम रूप से चयनित पत्रों का संकलन कर पंद्रह पुस्तकों का प्रकाशन करवाया जा चुका है।

तालिका 2 — पत्र आधारित पुस्तकें एवं सम्मिलित पत्र

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रकाशन वर्ष	सम्मिलित पत्र	क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रकाशन वर्ष	सम्मिलित पत्र
1.	माँ की पाती बेटी के नाम	2018	103	9.	पाती स्मृतियों के झरोखे से	2022	93
2.	पत्र पिता के	2019	69	10.	पाती डाकिए को	2023	101
3.	बच्चों के पत्र	2020	91	11.	लिख दी पाती बाबुल को	2023	181
4.	एक पाती मीत को	2021	118	12.	गौरैया की पुकार	2023	62
5.	प्रकृति की पुकार	2021	118	13.	पाती यादों के गलियारे से	2024	90
6.	पाती शिक्षक को	2021	60	14.	बच्चों की पाती मतदाताओं के नाम	2024	151
7.	बापू की चिट्ठी (मेरी ज़ुबानी)	2022	74	15.	मैं बाबुल की परछाई	2024	103
8.	माटी की पुकार	2022	90		**कुल पत्रों की संख्या**		1504

पत्र आधारित प्रकाशित पुस्तकें

नवाचार का प्रभाव— पाती एक ऐसा माध्यम है, जिससे हम अपने भावों तथा विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। हम जिन बातों को कहने में हिचकिचाते हैं, उन बातों को पाती के माध्यम से लिखकर दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। इनमें आत्मीयता का भाव रहता है तथा व्यक्ति अपने मन के उद्गारों को बेझिझक किसी के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

पाती अपनों को मुहिम पिछले साढ़े छह साल से निर्बाध रूप से संचालित की जा रही है। पाती मुहिम की प्रभावशीलता जानने के लिए समय-समय पर पाती मुहिम से जुड़े सदस्यों की कार्यशाला आयोजित कर उनके अनुभव प्राप्त किए जाते हैं। पाती मुहिम से जुड़ कर उन्हें कैसा लगता है, इस विषय पर पाती संयोजक एवं सह-संयोजक को पत्र द्वारा सूचित किया जाता है। यही नहीं विभिन्न विद्यालयों एवं छात्रावासों में जाकर इस मुहिम से जुड़े विद्यार्थियों, शिक्षकों, संस्था प्रधान के अनुभव भी प्राप्त किए जाते हैं। विद्यार्थियों के अभिभावकों से भी समय-समय पर प्रतिपुष्टि ली जाती है। पाती प्रतियोगिता में डाक द्वारा पत्र प्राप्ति की व्यवस्था है, जिनका रिकार्ड संधारित किया जाता हैं। पाती लेखकों की साहित्यिक अभिरुचि एवं लेखन कौशल में बढ़ोतरी देखने को

मिली है विभिन्न साहित्यिक संगोष्ठियों में उनकी उपस्थिति को देखा जा सकता है।

पाती मुहिम के निम्नलिखित सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं—

1. पाती मुहिम न केवल राजस्थान में अपितु भारत के 23 राज्यों के साथ-साथ विश्व के 10 बड़े देशों में भी अपना पूर्ण आकार ले चुकी है।
2. तीन लाख से भी अधिक लोग इस मुहिम से जुड़ चुके हैं, जिसमें ढाई लाख बच्चों और युवा पीढ़ी के है।
3. पाती आम आदमी से लेकर, व्यवसायी, समाजसेवी, कामकाजी महिला, गृहिणी, डॉक्टर, इंजीनियर, बैंककर्मी, विद्यालयी विद्यार्थी, शिक्षक, अध्यापक शिक्षक, संस्था प्रधान, साहित्यकार, लेखक आदि सम्मिलित हो चुके हैं।
4. अब लोग एक-दूसरे को पत्र लिखने लगे हैं। खासकर विद्यालयी विद्यार्थी और युवा इस तरफ उन्मुख हो रहे हैं।
5. बच्चों द्वारा किसी विशेष अवसर पर मँहगे गिफ्ट की जगह पत्र के माध्यम से अपनी खुशियाँ साझा की जा रही हैं।
6. पत्र विधा पर आधारित पुस्तकों में से किसी एक पत्र का वाचन नियमित रूप से कई विद्यालयों में प्रार्थना सभा में किया जा रहा है। यही नहीं हॉस्टल में भी पत्रों का वाचन हो रहा है।
7. अभिभावक एवं शिक्षक अपने बच्चों को पत्र विधा पर आधारित पुस्तकें भेंट करने लगे हैं।
8. बच्चों की पढ़ने की आदतों में वृद्धि हुई है।
9. पत्र लेखन प्रतियोगिताओं में भाग लेने से रचनात्मकता के विकास के साथ लेखन शैली एवं चिंतनशीलता में सुधार देखने को मिला है।

इतना ही नहीं आधुनिकता की चकाचौंध में परिवारों में निरंतर बढ़ती दूरियों को कम करने में यह मुहिम एक अहम् भूमिका अदा कर रही है। आज ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जहाँ पाती लेखन के माध्यम से परिवार के मध्य उत्पन्न अंतराल समाप्त हो गया और टूटे हुए परिवार आज पुनः एक हो गए हैं। हृदयतल की गहराइयों से लिखी गयी यह पातियाँ सामने वाले को भाव विभोर कर उसके मन मस्तिष्क में ऐसे भाव उत्पन्न करती हैं कि चाह कर भी स्वयं के भावों को नहीं रोक पाते हैं।

विभिन्न मुद्दों, जैसे— बाल विवाह, जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण आदि को लेकर लिखी गईं पातियाँ संपूर्ण समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हुए उन्हें संवेदनशील बनाने का प्रयास कर रही हैं।

वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित युवा पीढ़ी के लिए पाती मुहिम एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म बन चुका है, जो आज माता-पिता, पिता-पुत्री, गुरु-शिष्य, माँ-बेटी और मित्रों के बीच संबंधों को भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ जोड़ने का कार्य कर रहा है। इस मुहिम के माध्यम से युवा पीढ़ी भारतीय जीवन मूल्यों की ओर उन्मुख हो रही है।

इसी प्रकार बापू की चिट्ठी, शिक्षक को पत्र, प्रकृति की पुकार, गौरेया की पाती, माटी की पुकार, लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से, पाती स्मृतियों के झरोखे से एवं पाती डाकिए को जैसे विषयों पर पत्र लिखवाने से न केवल आस-पास के परिवेश के प्रति संवेदनशील होने में मदद मिली है, बल्कि पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं सामाजिक सरोकारों को बढ़ावा देने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। वहीं वीर जवानों के नाम पत्र लिखकर देश की सीमाओं पर डटे सुरक्षा प्रहरियों के प्रति सम्मान का भाव प्रकट किया है।

राज्य के विधानसभा चुनाव 2023 में पाती मुहिम के माध्यम से एक और नवाचारी प्रयोग किया गया। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थी जिनकी उम्र 18 वर्ष से कम थी, उन्हें अभिभावकों को पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया गया। पत्र में यह आह्वान किया गया कि मतदान दिवस पर अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। परिणाम बेहद उत्साहजनक रहे। राजस्थान के अकेले चुरु और टोंक जिले में ढाई लाख से भी अधिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपने अभिभावकों को पत्र लिखा।

पाती मुहिम में हितधारकों की भूमिका

पाती लेखन की प्रक्रिया को सरल एवं लोगों की पहुँच तक लाने के लिए समस्त पाती समूह के सदस्यों द्वारा इसका व्यापक प्रचार प्रसार किया जाता है, ताकि अधिक से अधिक लोग इसमें भाग ले सकें। इसमें पाती लेखन के विषयानुसार अलग-अलग वर्ग के लोगों, जैसे— शिक्षक वर्ग, व्यवसायी वर्ग, अन्य सरकारी अधिकारी-कर्मचारी विभिन्न महिला समूहों एवं विद्यार्थियों आदि से भी समूहवार एवं व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया जाता है। विभिन्न प्रेरकों द्वारा भी समाज की विभिन्न श्रेणियों के लोगों को पाती लेखन हेतु प्रेरित किया जाता है। (*लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से*, 2023, पृ.सं. 6)

पाती मुहिम आज वैश्विक स्तर पर कार्य कर रही है एवं इससे जुड़कर शिक्षक, विद्यार्थी, सरकारी कर्मी, निजीकर्मी, बैंककर्मी, प्रमाणित लेखाकार (चार्टर्ड अकाउण्टेंट), शासकीय कर्मचारी, व्यवसायी,

पुस्तक विमोचन एवं पाती लेखकों का सम्मान समारोह

गृहिणी, जन प्रतिनिधि, चिकित्सक, इंजीनियर, आमजन आदि सभी पूर्ण ज़िम्मेदारी के साथ इस मुहिम में कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहे हैं।

पाती समूह— इस मुहिम का सबसे बड़ा हितधारक पाती समूह ही है, जिसके अथक प्रयासों से आज इस मुहिम का स्वरूप विकसित हो चुका है। समूह में पाती संरक्षक मंडल, संपादकीय मंडल एवं इस अभियान में स्थायी रूप से जुड़े अनेक सदस्य सम्मिलित हैं।

सरकारी संस्थाओं के अधिकारी-कर्मचारीगण— हमने पाती लेखन का कार्य किया साथ ही, अपनी संस्थाओं के अन्य कर्मियों को भी प्रेरित किया। शिक्षा विभाग के विभिन्न संस्था प्रधान शिक्षक आदि से अपने विद्यालयों में पाती लेखन का कार्य करवाया एवं विद्यार्थियों को भी इस हेतु प्रेरित किया।

विद्यार्थी वर्ग— अब तक लिखे जा चुके तीन लाख पत्रों में से ढाई लाख पत्र विधार्थियों द्वारा लिखे गए हैं।

गृहिणी— पाती मुहिम के विकास में गृहिणियों का भी विशेष योगदान रहा है। जिन्होंने अपने साथ-साथ अपने परिवार के अन्य सदस्यों को पत्र लेखन के लिए प्रेरित किया।

निर्णायक मंडल— प्रतियोगिता के अंतर्गत प्राप्त समस्त पत्रों को तीन अलग-अलग निर्णायकों द्वारा पढ़कर पत्र की विषय-वस्तु, भाषा-शैली, प्रभावशीलता के आधार पर अंक प्रदान किए जाते हैं।

पुस्तक प्रकाशन में सहयोगकर्ता— निर्णायकों से प्राप्त अंक तालिका के आधार पर सर्वश्रेष्ठ पत्रों का संकलन कर पुस्तक प्रकाशन कार्य किया जाता है। पुस्तक प्रकाशन में सरकारी या गैर-सरकारी संगठनों एवं निजी लोगों द्वारा आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है।

पाती अपनों को मुहिम नवाचार के निहितार्थ

पाती अपनों को मुहिम लुप्त होती पत्र लेखन विधा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से आरंभ की गई थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में यह प्रयोग निम्नलिखित तथ्यों की प्राप्ति में सहयोग प्रदान करता है—

- बालमन को सकारात्मक दिशा में सोचने,
- बच्चों में सृजनशीलता एवं कल्पनाशीलता का विकास करने,
- लेखन कौशल को विकसित करने,
- पढ़ने एवं सीखने की प्रवृत्तियों में वृद्धि करने,
- सामाजिक सरोकारों के प्रति दायित्वबोध जगाने
- बच्चों में नैतिकता, मानवीय मूल्यों एवं संवैधानिक मूल्यों का विकास करना,
- परस्पर संवाद, सहयोग तथा सामूहिक कार्यों के प्रति उन्मुख होना,
- बच्चों के भीतर छिपी हुई क्षमताओं का विकास करना आदि। (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, मूलभूत सिद्धांत, पृ.सं. 6)।

उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के साथ पाती मुहिम से जुड़े हज़ारों-लाखों विद्यालयी बच्चों ने विभिन्न विषय आधारित पत्र ही नहीं लिखे अपितु रिश्तों की अहमियत, राष्ट्रीय भावना, बुनियादी साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सरोकार, सामाजिक

दायित्व बोध को भी न केवल सीखा है, अपितु समझा भी है। इसी प्रकार बच्चों में लेखन तथा पढ़ने की क्षमता का विकास हो रहा है, जो कि समग्र शिक्षा अभियान के उद्देश्य-बुनियादी शिक्षा (पढ़ने-लिखने) को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इससे विद्यालयी विद्यार्थियों की लेखन कौशल क्षमता का संवर्द्धन होगा।

जहाँ तक वर्तमान संदर्भ में पाती मुहिम की प्रासंगिकता है, वह धीरे-धीरे अपने उद्देश्यों की तरफ बढ़ती नज़र आ रही है। इसे अधिक व्यापक रूप देने एवं बच्चों की सृजनशीलता, लेखन कौशल अभिवृद्धि के लिए आवश्यक होगा—

- विद्यालयी विद्यार्थियों को डायरी लेखन के लिए प्रेरित किया जाए जिसमें प्रतिदिन की गतिविधियों का उल्लेख हो।
- विशेष अवसरों, जैसे— स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस, गाँधी जयंती, संविधान दिवस आदि पर विद्यालय स्तर पर पत्र लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए।
- बच्चों के मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए उसे अपने आस-पास के परिवेश के विषय में लेखन के लिए प्रेरित किया जाए।
- बच्चों को उनकी आयु अनुसार गद्य या पद्य साहित्य पढ़कर उन पर अपने विचार लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।
- मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ. एल.एन.) के अंतर्गत बच्चों को विभिन्न विषय आधारित पत्रों को कहानी के रूप में पढ़कर सुनाया जाए, उन्हें कैसा लगा इस पर उनकी प्रतिक्रियाएँ जाननी चाहिए।

अब तक का लेखा-जोखा यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि सही दिशा में उठाए गए कदम यद्यपि संख्या में कम ही होते हैं, लेकिन उस मिशन की पवित्रता एवं उद्देश्य को जल्द ही, आम लोग समझ जाते हैं और वह अभियान आम जन का अभियान बन जाता है, ओर यही सब कुछ "पाती अपनों को मुहिम" के साथ हुआ है।

संदर्भ

नेगी, सूरज सिंह, मीना सिरोला एवं चन्द्रमोहन उपाध्याय. (संपादक). 2018. *माँ की पाती बेटी के नाम*. सनातन प्रकाशन, जयपुर.

नेगी, सूरज सिंह एवं अन्य. (संपादक). 2019. *पत्र पिता के*. सनातन प्रकाशन. जयपुर.

———. 2020. *बच्चों के पत्र*. राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर.

———. 2021. *एक पाती मीत को*. साहित्यागार, जयपुर.

———. 2021. *प्रकृति की पुकार*. साहित्यागार, जयपुर.

———. 2021. *पाती शिक्षक को*. सनातन प्रकाशन, जयपुर.

———. 2022. *बापू की चिट्ठी (मेरी ज़ुबानी)*. साहित्यागार, जयपुर.

———. 2022. *माटी की पुकार*. साहित्यागार, जयपुर.

———. 2022. *पाती स्मृतियों के झरोखे से*. साहित्यागार, जयपुर.

———. 2023. *पाती डाकिए को*. दीपक पब्लिशर्स, जयपुर.

———. 2023. *लिख दी पाती बाबुल को*. दीपक पब्लिशर्स, जयपुर.

———. 2023. *गौरेया की पुकार*. दीपक पब्लिशर्स, जयपुर.

———. 2024. *पाती यादों के गलियारे से*. साहित्यागार, जयपुर.

———. 2024. *बच्चों की पाती मतदाताओं के नाम*. दीपक पब्लिशर्स, जयपुर.

———. 2024. *मैं बाबुल की परछाई*. दीपक पब्लिशर्स, जयपुर.

भारत सरकार. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार. http://www.education.gov.in

मीना, रमेश चन्द्र. 2023. *कोरे कागज*. अनुज्ञा प्रकाशन, नई दिल्ली.

रावत, कृष्णा. 2025. *स्मृति में रचे-बसे अद्भुत पत्र*. साहित्यागार, जयपुर.

रावत, कृष्णा एवं श्रीवास्तव सरकार (संपादक). 2025. *चयनित पत्र पुष्प*. साहित्यागार, जयपुर.

वाधवानी, नीलम. 2025. डॉ. सूरज सिंह नेगी के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श. साहित्यागार, जयपुर.

रघुरामन, एम. हाथ से लिखी चिट्ठियाँ. अब भी लोगों को जोड़ सकती हैं. दिनांक 3 फरवरी 2020 को *दैनिक भास्कर* से लिया गया।

समग्र शिक्षा http://samagra.education.gov.in.